ज्ञानस्वरोदय

रचयिता—

— भार्गववंशीय स्वामी चरणदासजी.

प्रकाशक—(राजा) रामकुमार-प्रेस-बुकडिपो,

१९५३] [मूल्य ।-)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

श्रीचरणदासकृत

ज्ञानस्वरोदय

दोहा

नमो नमो शुकदेवजी करूँ प्रणाम अनंत।
तव प्रसाद स्वरभेद को चरणदास बरनंत १
पुरुषोत्तम परमात्मा पूरण बिस्वा बीस।
आदिपुरुष अविचल तुही तोहिं नवाऊँ शीस २

कुण्डलिया

क्षर ॐ सूं कहत हैं अक्षर सोहं जान।
निहअक्षर श्वासारहित ताही को मन आन॥
ताही को मन आन रात दिन सुरति लगावों।
आपा आप विचार और ना शीश नवावों॥
चरणदास मत कहत हैं अगम निगम की सीख।
यही वचन ब्रह्मज्ञान को मानो बिस्वा बीस ३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ॐ सूं काया भई सोहं सो मन होय।
निहअक्षर सूं श्वासा भई चरणदास भल जोय॥
चरणदास भल जोय खैंच मनवा तहँ राखो।
क्षर अक्षर निहअक्षर एकै दुबिधा नाखो॥
जब दरश एक ही एक वेंष यह सबै तिहारो।
डाल पात फल फूल मूल सो सभी निहारो ४
श्वासा सो सोहं भयो सोहं सो ॐ कार।
ॐ सूं ररां भयो साधौ करौ विचार॥
साधौ करौ विचार उलट अपने घर आओ।
घट घट ब्रह्म अनूप सिमिटकरि तहाँ समाओ॥
चार वेद का भेद है गीता का है जीव।
चरणदास लखि आपको तौ मैं तेरा पीव ५

दोहा

सब योगन को योग है सब ज्ञानन को ज्ञान।
सबै सिद्ध को सिद्ध है तत्त्व सुरन को ध्यान ६
ब्रह्मज्ञान को जाप है अजपा सोहं साध।
परमहंस कोइ जानि है ताको मतो अगाध ७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भेद स्वरोदयसा लहै समुझै श्वास उसास।
बुरी भली तामें लखै पवन सुरत मन गास ८
शुकदेव गुरू किरपा करी दियो स्वरोदयज्ञान।
सबसो यह जानी परी लाभ होय कैं हान ९
इड़ा पिंगला सुषुमणा नाड़ी तीन विचार।
दहिने बायें स्वर चलै लखै धारना धार १०
पिंगल दहिने अंग है इड़ा सुबायें होय।
सुषुमण इनके बीच है जब स्वर चालैं दोय ११
जब स्वर चालैं पिंगला मध्य सूर्य तहँ वास।
इड़ा सुबायें अंग है चन्द करत परकास १२
उदय अस्त तिन को लखै निरगम सुरगम विद्ध।
पावै तत्त्ववरण को जब वह होवै सिद्ध १३
चरणदास सों शुक कहत थिर चर स्वर पहिचान।
थिर कारज को चन्द्रमा चर को भानु सुजान १४
कृष्णपत्त जब हीं लगै जाय मिला है भान।
शुक्लपत्त है चन्द्र को यह निश्चय कर जान १५
मङ्गल अरु इतवार दिन और शनीचर लोन।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शुभकारज को मिलत है सूरज के दिन तीन १६
सोमबार शुक्कर भलो दिन बेफइ को देख।
चन्द्रयोग में सफल हैं चरणदास कह शेख १७
तिथि औ वार विचारि कर दहिनों बायों अंग।
चरणदास स्वर जो मिलै शुभ कारज परसंग १८
कृष्णपक्ष के आदि ही तीन तिथ्य लग भान।
फिर चन्दा फिर भानु है फिर चन्दा फिर भान १९
शुक्लपक्ष के आदि ही तीन तिथ्य लग चन्द।
फिर सूरज फिर चन्द है फिर सूरज फिर चन्द २०
सूरज की तिथि में चलै ज्यों सूरज परकास।
सुख देही को करत है लाहालाह हुलास २१
शुक्लपक्ष चंदा चलै परिवा लेइ निहार।
फल आनँद मङ्गल करै देही को सुखसार २२
शुक्लपक्ष तिथि में चलै जो परिवा को भान।
होइ क्लेश पीड़ा कछू कै दुख कै कछु हान २३
सूरज की तिथि में चलै जो परिवा को चन्द।
कलह करै पीड़ा करै हीनताप कै द्वंद २४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऊपर बायें सामने स्वर बायें के संग।
जो पूछै शशियोग में तीनों को परसंग २५
नीचे पीछे दाहिने स्वर सूरज को राज।
जो कोइ पूछै आयकर तौ मन को शुभ काज २६
दहिनों स्वर जब चलत है पूछै बायें अंग।
शुक्लपच्छ नहिं वार हैं तौ निष्फल परसंग २७
जो कोइ पूछै आयकर बैठ दाहिनी ओर।
चंद चलै सूरज नहीं नहीं काज विधि कोर २८
जो सूरज में हर चलै कहै दाहिने आय।
लग्न वार अरु तिथि मिलै कहु कारज ह्वै जाय २९
जो चन्दा में स्वर चलै बायें पूछै काज।
तिथि औ अच्छर वार मिलि शुभ कारज को साज ३०
सात पाँच नौ तीनि गिनि पन्द्रह और पचीश।
काज वचन अच्छर गिनै भानु योग को ईश ३१
चार आठ द्वादश गिनै चौदह सोलह मीत।
चंद्रयोग के संग है चरणदास रणजीत ३२
कर्क मेष तुला मकर चारों चरती राश।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सूरज से चारों मिलत चर कारज परकाश ३३
मीन मिथुन कन्या कही चौथी औ धन मीत।
द्विस्वभाव को सुषुमणा मुरलीसुत रणजीत ३४
वृश्चिक सिंह वृष कुम्भयुत बायें स्वर के संग।
चंद्रयोग को मिलत है थिर कारज परसंग ३५
चित्त आपनो स्थिर करै नासा आगे नैन।
श्वासा देखै दृष्टि सों जब पावै स्वर बैन ३६
पाँच घड़ी पाँचौ चलैं फिरवा चारहि बार।
पाँच तत्त्व चालैं मिलैं स्वर बिच लेहि निहार ३७
धरती और अकाश है और तीसरी पौन।
पानी पावक पाँच ये करत श्वास में गौन ३८
धरती तो सन्मुख चलै औ पीरो रँग देख।
बारह अंगुल श्वास में सुरत निरत कर पेख ३९
ऊपर को पावक चलै लालबरण है वेख।
चार सुअंगुल श्वास में चरणदास औरेख ४०
नीचे को पानी चलै श्वत रंग है तास।
सोलह अंगुल श्वास में चरणदास कह भास ४१

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरो रंग है वायु को तिरछा चालै सोय।
आठ सुअंगुल श्वास में रणै जीत कर जोय ४२
स्वर दोनों पूरण चलैं बाहर ना परकाश।
श्याम रंग है तासु की सोई तत्त्व अकाश ४३
जल पृथ्वी के योग में जो कोइ पूछै बात।
शशिगर में जो स्वर चलै कहु कारज ह्वै जात ४४
पावक और अकाश पुनि वायु कभी जो होय।
जो कोइ पूछैं आयकर शुभ कारज नहिं होय ४५
जल पृथ्वी थिर काज को चर कारज को नाहिं।
अग्नि वायु चर काज को दहिने स्वर के माहिं ४६
रोगी को पूछै कोऊ बैठ चंद्र की ओर।
धरती बायें स्वर चलै मरै नहीं विधि कोर ४७
रोगी को परसंग जो बायें पूछै आन।
चंद्रबन्ध सूरज चलै जीवै ना वह जान ४८
बहते स्वर सों आय करि सुनै और जो जाय।
जो पूछै परसंग वह रोगी ना ठहराय ४९
सुनै और सों आय करि पूछै बहते श्वास।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वह निश्चय करि जानिए रोगी को नहिं नास ५०
सुनै और सों आय करि पूछै बहते पच्छ।
जेते कारज जगत के सफल होयँ या सच्च ५१
बहते स्वर पै आय करि जो पूछै सुन और।
जेते कारज जगत ते उलट होहिं विधि कोर ५२
कै बायाँ कै दाहिनो जो कोइ पूरण होय।
पूछै पूरण और ही कारज पूरण सोय ५३
वर्ष एक को फल कहै तत्त्व हि जानैं सोय।
काल समय सोई लखै बुरो भलो जग होय ५४

चौपाई

संक्रान्ति पुनि मेष विचारै। तादिन लगै सुघटी निहारै॥
तब हीं स्वर में करै विचार। चलै कौन सो तत्त्व निहार॥
जो बायें स्वर पृथ्वी होई। नीको तत्त्व कहावै सोई॥
देश वृद्ध अरु समय बतावै। परजा सुखी मेह बर्षावै॥
चारा बहुत ठौर को उपजै। नरदेही को अन बहु उपजै॥
जल जानै बायें स्वर माहीं। धरती फलै मेह बर्षाहीं॥
आनँद मंगल सों जग रहै। आपै तत्त्व दरश करि बहै॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जल धरती दोनों शुभ भाई। चरणदास शुकदेव बताई॥
तीनि तत्त्व का कहूँ विचारा।स्वर में जाको भेद निहारा॥
लगैं मेषसंक्राती तबहीं।लगतीघड़ीविचारैजबहीं॥
अग्नितत्त्वस्वरमेंजब चालै। रोग दोष में परजा हालै॥
काल पड़ै थोड़ा सा बरसै। देशभंग जो पावक दरसै॥
वात तत्त्व चालै स्वरसंगा।जगभयवानहोयकछुदंगा॥
अर्ध काल थोड़ा सा बरसै। वायुतत्त्व जो स्वरमें दरसै॥
तत्त्वअकाशस्वरचालैदोई। मेह न वर्षें अन्न न होई॥
कालपड़ैतृणउपजैनाहीं।तत्त्वअकाशहोयस्वरमाहीं ५५

दोहा

चैत महीना मध्य में जब हीं परिवा होय।
शुक्लपक्ष ता दिन लगै प्रात समय जो होय ५६
प्रातहिं परिवा को लखै पृथ्वी होय सुजान।
होय समौ परजा सुखी राजा सुखी निदान ५७
नीर चलै जो चंद्र में यही समय की जीत।
जल वर्षैं परजा सुखी संवत नीको मीत ५८
पृथ्वी पानी समौ जो बहै चंद्र सुस्थान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दहिने स्वर में जो बहै समौ सुमध्यम जान ५९
भोरहि जो सुषुमण चलै राज होय उत्पात।
देखनवालो विनश है और कालपरनात ६०
राज होय उत्पात पुनि पड़ै काल विश्वास।
मेह नहीं परजा दुखी जो होय तत्त्व अकाश ६१
श्वासा में पावक चलै पड़ै काल जब जान।
रोग होय परजा दुखी घटै राज्य का मान ६२
भय कलेश होइ देश में विग्रह फैले अन्त।
पड़ै काल परजा दुखी चलै वायु का तन्त ६३
संक्रायत औ चैत को दोनों भेद लखाय।
जगत काज अब कहत हूँ चंद्र सूर्य को न्याय ६४

चौपाई

विवाह दानतीरथजोकरैं। बस्तर भूषण घर पग धरैं॥
बायें स्वर में ये सबकीजै। पोथीपुस्तकजोलिखलीजै॥
योगअभ्यासअरुकीजैप्रीत। औषध बाड़ी कीजै मीत॥
दीक्षामंतर बोवैं नाज। चन्द्रयोग थिर बैठे राज॥
चंद्रयोगसुस्थिरपुनिजानों। थिरकारजसबहींपहिचानों॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

करै हवेली छप्पर छावै। बाग़ बग़ीचा गुफा बनावै॥
हाकिम जाय कोट में बरै। चंद्रयोग आसन पग धरै॥
चरणदास शुकदेव बतावैं। चंद्रयोगथिरकाजकहावै ६५

दोहा

बायें स्वर के काज ये सो मैं दियो बताय।
दहिने स्वर के कहत हूँ ज्ञान स्वरोदयगाय ६६

चौपाई

जो खाँड़ौ करलीयो चाहै। जाकर बैरी ऊपर बाहै॥
युद्ध बाद रण जीतैं सोई। दहिनेस्वर में चालै कोई॥
भोजन करै करै अस्नान। मैथुनकर्म भानु परधान॥
बही लिखै कीजै व्यवहारा। गजघोड़ावाहनहथियारा॥
विद्या पढ़ै नई जो साधै। मंत्रसिद्धिऔध्यानअराधै॥
वैरी भवन गवन कोकीजै। अरुकाहूकोऋणजो दीजै॥
ऋण काहू पै तू जो माँगैं। विषऔभूत उतारनलागैं॥
चरणदासशुकदेवविचारी। ये चरकर्मभानुकीनारी ६७

दोहा

चर कारज को भानु है स्थिर कारज को चन्द।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सुषुमणचलत न चालिए तहाँ होय कछुद्धन्द ६८
गाँव परगने खेत पुनि इधर उधर में मीत।
सुषुमण चलत न चालिए बरजत है रणजीत ६६
छिन बायें छिन दाहिने सोई सुषुमण जानि।
ढील लगै कै ना मिलै कै कारज की हानि ७०
होय क्लेश पीड़ा कछू जो कोई कहि जाय।
सुषुमण चलत न चालिए दीन्हों तोहिं बताय ७१
योग करौ सुषुमण चलै कै आतम का ध्यान।
और काज कोई करै तौ कछु आवै हान ७२
पूरब उत्तर मत चलौ बायें स्वर परकाश।
हानि होय बहुरै नहीं आवन की नहिं आश ७३
दहिने चलत न चालिए दच्छिण पश्चिम जानि।
जोरे जाय बहुरे नहीं औ होवे कछु हानि ७४
दहिने स्वर में जाइए पूरब उत्तर राज।
सुख सम्पति आनँद करै सभी होय शुभकाज ७५
बायें स्वर में जाइए दच्छिण पश्चिम देश।
सुख आनँद मंगल करै जोरे जाय प्रदेश ७६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दहिने सेती आयकर बायें पूछै कोय।
जो बायें स्वर बंद है सफल काज नहिं होय ७७
बायें सेती आयकर दहिने पूछै धाय।
जो दहिनो स्वर बंद है कारज अफल बताय ७८
जब स्वर भीतर को चलै कारज पूछै कोय।
पैज बाँध वासों कहो मनसा पूरण होय ७६
जब स्वर बाहर को चलै तब कोइ पूछै तोर।
वाको ऐसे भाषिए नहिं कारज विधि कोर ८०
बाईं करवट सोइए जल बायें स्वर पीव।
दहिने स्वर भोजन करै तो सुख पावै जीव ८१
बायें स्वर भोजन करै दहिने पीवै नीर।
दश दिन भूलो यों करै पावै रोग शरीर ८२
दहिने स्वर झाड़े फिरै बायें लघु शंकाय।
युगता ऐसो साधिए दीनों भेद बताय ८३
चंद्र चलावै दिवस को रात चलावै सूर।
नित साधन ऐसे करै होय उमर भरपूर ८४
जितनो ही बायों चलै सोई दहिनो होय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दश श्वासा सुषुमण चलै ताहि विचारो लोय ८५
आठ पहर दहिनो चलै बदलै नहीं जो पौन।
तीन वर्ष काया रहै जीव करै फिर गौन ८६
सोलह पहर चलै जभी श्वास पिंगला माहि।
युगलवर्ष काया रहै पीछे रहती नाहि ८७
तीन राति अरु तीन दिन चलै दाहिनी श्वास।
संवत भर काया रहै पीछे होय विनास ८८
सोलह दिननिशिदिन चलै श्वास भानु की ओर।
आयु जान इक मास की जीव जाइ तनु छोर ८९
नौ भकुटी सप्तै श्रवण पाँच तार का जान।
नासा जिह्वा एक सों काल भेद पहिचान ९०
भेंद गुरू सों पाइए गुरु बिन लहहि न ज्ञान।
चरणदास यों कहत हैं गुरु पर वारूँ प्रान ९१
एक मास जो रैन दिन भानु दाहिनो होय।
चरणदास यों कहत हैं नर जीवे दिन दोय ९२
नाड़ी जो सुषुमण चलै पाँच घड़ी ठहराय।
पाँच घड़ी सुषुमण बहै तबहीं नर मर जाय ९३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नहीं चंद्र नहि सूर है नहीं सुषुमणा बाल।
मुखसेती श्वासा चलै घड़ी चार में काल ६४
चार दिना कै आठ दिन बारह कै दिन बीश।
ऐसे जब चन्द्रा चलै आयु जान बड़ ईश ६५
तीन रात औ तीन दिन चालै तत्त्व अकाश।
एक वर्ष काया रहै फेरि काल विश्वास ६६
दिन को तो चन्द्रा चलै चलै रात को सूर।
यह निश्चय करि जानिए प्राणगमन बहु दूर ६७
राति चलै स्वर चन्द्र में दिन को सूरज बाल।
एक महीना यों चलै छठे महीना काल ६८
जब साधू ऐसी लखै छठे महीना काल।
आगे ही साधन करै बैठि गुफा ततकाल ६९
ऊपर खैंचि अपान को प्राण अपान मिलाय।
उत्तम करै समाधि को ताको काल न खाय १००
पवन पिए ज्वाला पचै नाभि तले कर राह।
मेरुदंड को फारिकैं बसै अमरपुर माह १०१
जहाँ काल पहुँचै नहीं यम का होय न त्रास।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

गगन मँडल को जायकर करै उनमनी वास १०२
जहाँ काल नहिं ज्वाल है छुटै सकल संताप।
होय उनमनी लीन मन बिसरै आपा आप १०३
तीनों बन्ध लगाय के या बायें को साध।
योग सुषुमणा ह्वै चलै देखै खेल अगाध १०४
शक्ति जाय शिव सों मिलै जहाँ होय मन लीन।
महाखेचरी जो लगै जानै जान प्रवीन १०५
आसनपद्म लगायकर मूलबंध को बाँध।
मेरुदण्ड सीधो करै सुरनगगन को साध १०६
चन्द्र सूर्य दोउ सम करै ठोढ़ी हिये लगाय।
षटचक्कर को बेधकर शून्य शिखर को जाय १०७
इड़ा पिंगला साधकर सुषुमण में कर वास।
परमज्योतिझिलमिलतहाँ पूजैमन विश्वास १०८
जिन साधन आगे करी तासों सब कछु होय।
जब चाहै तबहीं करैं काल बचावैं सोय १०९
तरुण अवस्था योग कर बैठ रहै मन जीत।
काल बचावै साध वह अन्त समय रणजीत ११०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सदा आप में लीन रहु करि योगा अभ्यास।
आवत देखै काल जब गगनमँडल कर वास ११ १
शनई शनई साधकर राखै प्राण बढ़ाय।
पूरो योगी जानिए ताको काल न खाय ११ २
पहिले साधन ना कियो गगनमँडल को जान।
आवत जानै काल जब कहा करै अज्ञान ११३
योग ध्यान कीन्हों नहीं ज्वान अवस्था मीत।
आगम देखै काल को कहा सकै वह जीत ११४
काल जीति हरि सों मिलै शून्य महल अस्थान।
आगे जिन साधन करी तरुण अवस्था जान ११५
काल अवधि बीतै जबै तबै जानि वह जाय।
योगी प्राण उतारिए लेहि समाधि जगाय ११६
काल जीति जग में रहै मौत न व्यापै ताहि।
दशों द्वार को फोरकर जब चाहै तब जाहि ११७
सूरजमंडल चीरकै योगी त्यागै प्राण।
सायुज्यमुक्ति सोई लहै पावै पद निर्वाण ११८
कृष्णपक्ष के मध्य में दक्षिण होयँ जु भान।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

योगी वपु नहिं छाँड़ि हैं राजा होय कि आन ११६
राज्य पाय हरिभक्ति कर पूर बली पहिचान।
योगयुक्ति पावैं बहुरि दूसरि मुक्ति निदान १२०
सूर्य उत्तरायन लखै शुक्लपक्ष के माहिं।
योगी काया त्यागिए यामें संशय नाहिं १२१
मुक्त होय बहुरै नहीं जीव खोज मिटि जाय।
बूँद समुंदर मिल रहै दुनियाँ ना ठहराय १२२
सूर्य दक्षिणायन बिषे रहैं मास षट जान।
फिर उतरायन जायकर रहैं मास षट भान १२३
दोनों स्वर को शुद्ध कर श्वासा में मन राख।
भेद स्वरोदय पाय कर तब काहू सों भाख १२४
जो रण ऊपर जाइए दहिने स्वर परकाश।
जीत होय हारै नहीं करै शत्रु को नाश १२५
दुर्जन को स्वर दाहिनो तेरो दहिनो होय।
जो कोई पहिले चढ़ै खेत जीति है सोय १२६
सुषुमण चलत न चालिए युद्ध करन सुन मीत।
शीश कटावै की फँसै दुर्जन होई जीत १२७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

जो बायें पृथिवी चलै चढ़ि आवे कोइ भूप।
आप बैठि डँड़ पेलिए बात कहत हूँ गूप १२८
जल पृथिवी स्वर में चलै सुनो कान दे वीर।
सफल काज दोनों करैं कै धरती कैं मीर १२६
पावक और अकाश वा वायुतत्त्व जो होहिं।
कछू काज नहिं कीजिए इनमें बरजूँ तोहिं १३०
दहिनो स्वर जब चलत है कहीं जाय जो कोय।
तीन पाँव आगे धरै सूरज को दिन होय १३१
बायें स्वर में जाइए बायें परघर चार।
बायें पग पहिले धरै होय चंद्र को वार १३२
दहिने स्वर में जाइए दहिनी डग भर तीन।
बायें स्वर में चार डग बायें कर परबीन १३३
गर्भवती के गर्भ को जो कोइ पूछै आय।
बालकहै कै बालकी जीवै कै मर जाय १३४
पृच्छा बालक होन की जो कोइ पूछै तोय।
बायें कहिये छोकरी दहिने बेटा होय १३५
दहिने स्वर के चलत ही जो वह पूछै आय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वाको बायों स्वर चलै बालक ह्वै मर जाय १३६
दहिने स्वर के चलत ही जो वह पूछै बैन।
वाहू को दहिनो चलै लड़का ह्वै सुख चैन १३७
बायें स्वर के चलत ही आय कहै जो कोय।
बेटी ह्वै जीवै नहीं वाको दहिनो होय १३८
बायें स्वर के चलत ही जो वह पूछै बात।
वाहू को बायों चलै बेटी ह्वै कुशलात १३९
तत्त्वव्योम के चलत ही प्रश्नगर्भ की आय।
होय नपुंसक हीजड़ा कै सतवाँसो जाय १४०
लेन परीक्षा गर्भ की जो कोइ पूछै आय।
अच्छहोय जो ता समय ओछाहीगिरिजाय १४१
क्षण बायें क्षण दाहिने दो स्वर सुषुमण होय।
पूछनवाले सों कहौ बालक उपजैं दोय १४२
वायुतत्त्व के चलत ही जो कोइ पूछै आय।
क्षय होवै बाढ़ै नहीं पेट माहिं बिलगाय १४३
जो कोइ पूछै आयकर वाको गर्भ कि नाहिं।
दहिनो बायों स्वर चलै साथ श्वास के माहिं १४४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बंध ओर जो आय करि ह्वै पूछै जो कोइ।
बन्ध ओर तौ गर्भ है बहते स्वर नहिं होइ १४५
इड़ा पिंगला सुषुमणा नाड़ी कहिए तीन।
सूरज चन्द्र विचारिकै रहै श्वास लवलीन १४६
जैसे कछुआ सिमिटिकर आपी माहिं समाय।
तैसे ज्ञानी श्वास में रहै सुरति लवलाय १४७
स्वास बनावै कोड़ की आयु जान नर लोय।
बीत जाय श्वासा सब तबहिं मृतक नरहोय १४८
इक्कीस हजार छासौ चलै रात दिना जो श्वास।
बीसासौ जीवै बरष होय अग्नि को नास १४९
अकाल मृत्यु कोई मरै ह्वैकर भुगतै भूत।
श्वास जहाँ बीतैं सभी तब आवे यमदूत १५०
चारों संयम साधकर श्वासा युक्ति चलायु।
अकाल मृत्यु आवै नहीं जीवै पूरी आयु १५१
सूक्षम भोजन कीजिए रहिए ना पड़ सोय।
जल थोरो सो पीजिए बहुत बोल मत खोय १५२

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

कुंडलिया

मोक्ष मुक्ति तुम चहत हौ तजौ कामना काम।
मन इच्छा को मेटकर भजौ निरंजन नाम॥
भजौ निरंजन नाम देह अभ्यास मिटावै।
पंचन के तज स्वादु आप में आप समावै॥
जब छूटै झूँठी देह जैसे कै तैसे रहिया।
चरणदास यह मुक्ति गुरू ने हमसों कहिया १५३

दोहा

देह मरै तू है अमर पारब्रह्म है सोय।
अज्ञानी भटकत फिरत लखै सो ज्ञानी होय १५४
देह नहीं तू ब्रह्म है अविनाशी निर्बान।
नित न्यारो तू देह सों कर्म देह सब जान १५५
डोलन बोलन सोवना भक्षण कर आहार।
सुख दुख मैथुन रोग सब गर्मी शीतनिहार १५६
जाति वर्ण कुल देह की सूरत मूरत नाव।
उपजै विनशै देह सों पाँच तत्त्व को गाँव १५७
पावक पानी वायु है धरती और अकाश।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाँच तत्त्व के कोट में आय कियो तैं वास १५८
पाँच पचीसौं देह सँग गुण तीनों हैं साथ।
घट उपाधि सों जानिए करत रहत उतपाथ १५९
जिह्वा इन्द्री नीर की नभ की इन्द्री कान।
नासा इन्द्री धरन की करि विचार पहिचान १६०
त्वचा सो इन्द्री वायु की पावक इन्द्री नैन।
इनको साधै साधनो पद पावे सुख चैन १६१
नींद जँभाई आलकस भूँख प्यास जब होय।
चरणदास पाँचो कही अग्नितत्त्व सो जोय १६२
रक्तपित्त कफ तीसरो बिंदु पसीनो जान।
चरणदास परकीर्त्तिये पानी सों पहिचान १६३
चाम हाड़ नाड़ी कहूँ रोम जाम औ मास।
पृथिवी की परकीर्त्तिये अन्त सबन को नास १६४
बल करना अरु धावना परसारन संकोच।
देह बढ़ै सो जानिए वायुतत्त्व है शोच १६५
काम क्रोध मद लोभ अरु मोह कहत हैं लोग।
नभ की पाँचो जानिए नित न्यारा तू योग १६६

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पाँच पचीसो एक ही इनके सकल स्वभाव।
निर्विकार तू ब्रह्म है आप आपको पाव १६७
निराकार निर्लिप्त तू देही जान अकार।
आपनि देही मान मत यही ज्ञान ततसार १६८
मस्तक छेद सकै नहीं पावक सकै न जार।
मरै मिटै सो तू नहीं गुरुगम भेद निहार १६९
जलै कटै काया यही बनै मिटै फिर होय।
जिव अविनाशी नित्यहै जानै बिरला कोय १७०
आँख नाक जिह्वा कहूँ त्वचा जान अरु कान।
पाँचो इन्द्रिय ज्ञान हैं जानैं जान सुजान १७१
गुदा लिंग मुख तीसरो हाथ पाँव लखि लेह।
पाँचो इन्द्रिय कर्म हैं यह भी कहिए देह १७२
पृथिवी काल में ठौर है मुखै जानिए हार।
पीतरंग पहिचानियो पीवन खान अहार १७३
पित्ते में पावक रहै नयन जानिए द्वार।
लालरंग है अग्नि को लोभ मोह आहार १७४
जल को वासा भाल है लिंग जानिए द्वार।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मैथुनकर्म अहार है धौलो रंग निहार १७५
पवन नाभि में रहत है नासा जान जुहार।
हरयो रंग है वायु को गंध सुगंध अहार १७६
आकाश शीश में वास है शरवन द्वारो जान।
शब्द कुशब्द अहारहै ताहि श्याम पहिचान १७७
कारण सूक्षमलिंग है अरु कहियत अस्थूल।
शरीर चार सों जानिए मैं मेरी जड़मूल १७८
चित बुधि मन अहंकार जो अंतःकरण सुचार।
ज्ञान अग्नि सों जानिए कर कर मीत विचार १७९
शब्द स्पर्श हु गन्ध है अरु कहियत रसरूप।
देह कर्म तनु मात्रा तू कहियत निहरूप १८०
निराकार सों है अचल निरवासी तू जीव।
निरालम्ब निरवैरसों अज अविनासी जीव १८१
बायें कोठा अग्नि को दहिने जल परकास।
मन हिरदय अस्थान है पवन नाभि में वास १८२
मूल कमलदल चार को लाल पंखुरी रंग।
गौरीसुत वासा कियो छः सौ जाप इकंग १८३

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पीतवर्ण षटदल कमल नाभी तले सँभाल।
षटसहस्र जप जापि ले ब्रह्म सवित्रीनाल १८४
दश पँखुरी को कमल है नीलवर्ण सो नाम।
विष्णु लक्ष्मी वास किय षष्ठ सहस्सर याम १८५
अनहद चक्र हृदय रहै द्वादशदल अरु श्वेत।
षटसहस्र जप जापिले सो शिव सक जहँ देत १८६
षोडश दल को कमल है कण्ठवास शशिरूप।
जाप सहस्सर जहँ जपै भेद लहै अतिगूप १८७
अग्निचक्र दो दल कमल त्रिकुटी धाम अनूप।
जाप सहस्सर जहँ जपै पावै ज्योतिस्वरूप १८८
दलहजार को कमल है गगनमँडल में वास।
जाप सहस्सर जहँ जपै तेजपुंज परकास १८९
योगयुक्ति कर खोजिले सुरति निरत कर चीन।
दश प्रकार अनहद बजै होय जहाँ लवलीन १९०

कुंडलिया

एक भँवर गुंजारसी द्वितिय शंखध्वनि होय।
तीजे शब्द मृदंग का चौथे ताल है सोय॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चौथे ताल है सोय पाँचवें घंटा बाजै।
छठे सुमुरली नाद सातवें भेरि जु गाजै।
अठवें बाजै दुंदुभी सिंह गर्जना नवलो।
दशवें बाजै घूँघुरू चरणदास सुन लो १६१

दोहा

दश प्रकार अनहद घुरै जित योगी ह्वै लीन।
इन्द्रिय थकै मनवाँ थकै चरणदास कहि दीन १६२
तीन पाँच नौ नाड़िका दश बाईं को जान।
प्राण अपान समान है अरु कहियत उद्यान १६३
व्यानवायु अरु किरकरा कूरम बाईं जीत।
नाग धनंजय देवदत दश बाईं रणजीत १६४
नवो द्वार को बंदकर उत्तम नाड़ी तीन।
इड़ा पिंगला सुषुमणा केलि करै परबीन १६५
करते प्राणायाम के तरि गये पतित अनेक।
अनहदध्वनि के बीच में देखैं शब्द अलेख १६६
पूरक कर कुम्भक करै रेचक पवन उतार।
ऐसे प्राणायाम कर सूक्षम करै अहार १६७

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

धरती बंद लगाय कर दशौ वायु को रोक।
मस्तक प्राण चढ़ाय कर करै अमरपुर भोक १९८
पाँचो मुद्रा साधकै पावे घट को भेद।
नाड़ी शक्ति चढ़ाय कै षट चक्कर को छेद १९९
योगयुक्ति कै कीजिए कै अजपा को ध्यान।
आपा आप विचारिए परम तत्त्व को ज्ञान २००
शूद्रै वैश्य शरीर है ब्राह्मण औ रजपूत।
बूढ़ा बाला तू नहीं चरणदास अवधूत २०१
काया माया जानिए जीव ब्रह्म है मित्त।
काया छूटि सूरत मिटै तू परमातम नित्त २०२
पाप पुण्य आशा तजो मान और तो थाप।
काया मोह विकार तजि जपै सु अजपा जाप २०३
आप भुलानो आपमें बँध्यो आप ही आप।
जाको ढूँढ़त फिरत है सो तू आपी आप २०४
इच्छा दुई बिसारि करि क्यों न होय निर्वास।
तू तो जीवनमुक्त है तजो मुक्ति की आस २०५
पवन भई आकाश सों अग्नि वायु सों होय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पावक सों पानी भयो पानी धरती सोय २०६
धरती मिटते स्वाद है खारी स्वाद सों नीर।
अग्नि चरफरो स्वाद है खट्टो स्वाद समीर २०७
खट्टा मीठा चरफरा खारा पर मन होय।
जबहीं तत्त्व विचारिए पाँच तत्त्व में कोय २०८
स्वाद नाप औ रंग है और बताई चाल।
पाँच तत्त्व की परख यह साधु पाव तत्काल २०६
तिरकोनो पावक चलै धरती तौ चौकोर।
शून्य स्वभाव अकाश को पानी लंबो गोल २१०
अग्नितत्त्व गुण तामसी कही रजोगुण बाय।
पृथ्वी नीर सतोगुणी नभ है अस्थिर भाय २११
नीर चलै जउ श्वास में रण ऊपर चढ़ि मीत।
वैरी को शिर काटकरि घर आवै रणजीत २१२
पृथ्वी के परकाश में युद्ध करै जो कोइ।
दोउ दल रहै बराबरी हारि वाम में होइ २१३
अग्नितत्त्व के बहत ही युद्ध करन मत जाव।
हारि होय जीतै नहीं अरु आवै तन घाव २१४

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तत्त्व अकाशहि जो चलै तौ वाहीं रहि जाय।
रण माहीं काया छुटै घर नहिं देखै आय २१५
जल पृथ्वी के योग में गर्भ रहै सो पूत।
वायुतत्त्व में छोकड़ी आवर सूत कुसूत २१६
पृथ्वीतत्त्व में गर्भ जो बालक होवे भूप।
धन्वन्ता सोइ जानिए सुन्दर होय स्वरूप २१७
अग्नितत्त्व जब चलत है कभी गर्भ रहि जाय।
गर्भ गिरै माता दुखी हो माता मर जाय २१८
वायुतत्त्व स्वर दाहिने करै पुरुष जब भोग।
गर्भ रहै जो ता समय देही आवें रोग २१९
आसन संयम साधकर दृष्टि श्वास के माहिं।
तत्त्वभेद यों पाइए बिन साधे कछु नाहिं २२०
आसन पद्म लगाय कै एक वर्ष नित साध।
बैठे लेटे डोलते श्वासा ही आराध २२१
नाभि नासिका माहिं कर सोहं सोहं जाप।
सोई अजपा जाप है छुटै पुण्य औ पाप २२२
भेद स्वरोदय बहुत है सूक्ष्म कह्यो बनाय।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ताकोसमझविचारलेअपनो चितमन लाय २२३
धरणि टरै गिरिवर टरै ध्रूव टरै सुन मीत।
वचन स्वरोदय ना टरै मुरलीसुत रणजीत २२४
शुकदेव गुरु की दया सों साधु दया सों जान।
चरणदास रणजीत ने कह्यो स्वरोदय ज्ञान २२५

छप्पय

उहरे में मम जन्म नाम रणजीत बखानो।
मुरली को सुत जान जाति दूसर पहिचानो॥
बाल अवस्था माहिं बहुरि दिल्ली में आयो।
रमत मिले शुकदेव नाम चरणदास धरायो॥
योगयुक्ति हरि भक्ति करि ब्रह्मज्ञान दृढ़ कर गह्यो।
आतमतत्त्वविचारिकै अजपामेंसनि मनरह्यो२२६

इति श्रीज्ञानस्वरोदयं चरणदासकृतं सम्पूर्णम्।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हमारी प्रसिद्ध पुस्तकें

विश्रामसागर—ज्ञान और भक्ति को बढ़ानेवाली कथाओं का भंडार। कविता इसकी बड़ी मनोहर है। छपते ही हाथो-हाथ बिक जाती है। नया संस्करण छपकर तैयार है। मूल्य ७)

व्रजविलास—आनन्दकन्द कृष्णचंद की बाललीलाएँ, गोपियों और ग्वालबालों का सखा कृष्ण के ऊपर अपूर्व प्रेम, नंद, यशोदा का वात्सल्य, सभी कुछ इसमें है। मूल्य ६)

शिवपुराण भाषा—भगवान् शिव की महिमा के साथ ही शिव-पार्वती-सम्बन्धी सैकड़ों अनूठी कथाएँ इस महापुराण में हैं। ज्ञानोपदेश का तो यह खज़ाना ही है। मूल्य १२)

भक्तमाल—भगवान् के भक्तों के अपूर्व चरित्र इसमें पढ़ने को मिलते हैं। भाषा वार्तिक में है। मूल्य ६)

भगवद्गीता—यह संसार भर में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक मानी गई है। हमारी गीता में संस्कृत श्लोक, पदच्छेद, प्रत्येक शब्द का अर्थ, फिर अर्थ और भावार्थ देकर इसे ऐसा बना दिया गया है कि कम पढ़े लोग या केवल हिंदी जाननेवाली स्त्रियाँ भी इसकी गूढ़ बातों को आसानी से समझ लेती हैं। बा० हरिराम भार्गव ने बड़े परिश्रम से यह प्रामाणिक गीता भाष्य तैयार किया है। यह इतनी लोकप्रिय है कि अनेक बार छप चुकी है। नया संस्करण अभी छपा है। मूल्य ६)

मिलने का पता

मैनेजर—(राजा) रामकुमार बुकडिपो

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस, बुकडिपो, लखनऊ.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor